पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.01.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-15 पौष-2082 दयानन्दाब्द 201 01 जनवरी से 15 जनवरी 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.01.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

99वें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द को दी श्रद्धांजलि

स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्शों पर चलने का संकल्प लें –सांसद मनोज तिवारी

स्वामी श्रद्धानन्द ने घर वापसी का मार्ग प्रशस्त किया –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

नई दिल्ली, मंगलवार 23 दिसम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का 99वाँ बलिदान दिवस 24, मदर टेरेसा क्रीसेंट रोड, नई दिल्ली में सौल्लास मनाया गया। आचार्य गवेंद्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। मुख्य यज्ञमान एवं मुख्य अतिथि सांसद मनोज तिवारी एवं सुरभि तिवारी रहे उनके संग उनकी प्रिय बेटियां सान्विका एवं मनोज्ञा रही। सांसद मनोज तिवारी ने कहा की आज हम स्वामी श्रद्धानंद जी का 99वाँ बलिदान दिवस मेरे आवास पर मना रहे हैं इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हुँ। स्वामी श्रद्धानंद हिन्दू समाज और सत्य सनातन के लिए बलिदान हो गए वह आने वाली चुनौतियों को पहचानते थे? इसलिए उन्होंने हिन्दू समाज को संगठित किया, निश्चित रूप से जो आर्य समाज आगे बढ़ रहा है इसमें स्वामी श्रद्धानंद जी का बहुत बड़ा योगदान है उन्होंने कहा कि भगवा रंग हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है हम स्वामी दयानंद और स्वामी श्रद्धानंद के दिखाएं रास्ते पर लक्ष्य प्राप्ति तक चलते रहेगे,सामाजिक समरसता का संदेश जो स्वामी श्रद्धानंद ने दिया उसे जीवन में आत्मसात करेंगे। समारोह अध्यक्ष शिक्षाविद अंजू मेहरोत्रा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने दलितोद्धार का सराहनीय कार्य किया और ऊंच नीच की दीवार को मिटाने में अहम भूमिका निभाई।उनके समाज उत्थान के योगदान को सदैव स्मरण रखा जायेगा। समारोह के संयोजक व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी जी ने धर्मांतरित हिन्दुओं का पुनरू शुद्धिकरण कर हिन्दू समाज में घर वापिसी का मार्ग प्रशस्त किया व इसी शुद्धि कार्य के लिए वे बलिदान हो गए।उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए जालन्धर में कन्या महा विद्यालय की स्थापना की।वह सर्वदानी थे,उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के लिए अपनी कोठी व प्रेस बेचकर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। आचार्य गवेंद्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानंद जी के प्रवचनों को सुनकर उनके जीवन में बदलाव आया और वे मुंशी राम से स्वामी श्रद्धानन्द बने उन्होंने आर्य समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया और अनेकों गुरुकुलों की स्थापना की। इस अवसर पर भाजपा नेता जोगी राम जैन,पार्षद यशपाल आर्य,ओम सपड़ा,डा डी के गर्ग,जश्नने मोहाल आदि ने भी अपने विचार रखे। गायिका प्रवीन आर्या पिंकी,रमेश बेदी,प्रवीण आर्य गाजियाबाद, सुन्दर शास्त्री आदि ने मधुर गीत प्रस्तुत किये। मुख्य रूप से महामन्त्री महेन्द्र भाई, देवेन्द्र भगत, धर्मपाल आर्य, प्रकाश वीर शास्त्री, सुशील बाली,डा प्रमोद सक्सेना,सुभाष शर्मा, यज्ञवीर चौहान, देवेन्द्र गुप्ता ,सुरेश आर्य, रमेश गाड़ी, अमर सिंह सहरावत, कवर पाल शास्त्री, रोहित कुमार आदि उपस्थित रहे।

डॉ. डी.के. गर्ग की पुस्तकों का विमोचन।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान

आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख पत्र राष्ट्र धर्म के जनवरी 2016 विशेषांक से साभार

गाँधी के पहले राजनीतिक शिकार- स्वामी श्रद्धानन्द

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

जिन्होंने इतिहास के उन पन्नो को पलटा है, जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे थे, तब उन्होंने आर्थिक सहायता के लिये अभ्यर्थना भारत से की द्य उन दिनों गुरुकुल कांगड़ी में २–३ अंग्रेजी अख़बार आते थे द्य स्वामी श्रद्धानंद ने उन अखबारों के आधार पर गांधीजी की सहायता करने की सोची। गुरुकुल के छात्रों ने दिसम्बर की ठण्ड में गंगा किनारे कुछ श्रम कर कुछ रुपये इकट्ठे करके 'गुरुकुल सहायता' के नाम से उनको भेजे। स्वामी श्रद्धानंद आयु, ज्ञान, अनुभव तथा सेवा में गांधी से श्रेष्ठ और ज्येष्ठ तो थे ही, इस कारण गांधी उन्हें बड़े आदर से 'बड़े भाई जी' शब्द से सम्बोधित किया करते थे। स्वामी श्रद्धानंद कांग्रेस में देश सेवा हेतु शामिल हुए थे, परन्तु हिन्दू–मुस्लिम एकता के नाम पर मुसलमानों की चापलूसी, हिन्दू हितो की अपेक्षा, खिलाफत आन्दोलन को समर्थन, दंगो की निन्दा तक न करना, अछूतों (दलित) कहे जाने वाले ८ करोड़ हिन्दुओ के हित में कोई कदम न उठाना जैसे अनेक विषय थे जिनके कारण स्वामीजी को कांग्रेस से अलग होना पड़ा द्य भारतीय आश्रम–व्यवस्था में वानप्रस्थी को 'महात्मा' शब्द से ही सम्बोधित किया जाता है द्य उन दिनों जब गुरुकुल का वार्षिकोत्सव था, गांधी स्वामीजी से मिलने पहुंचे थे। स्वामीजी उनको कोई उपहार या भेंट देना चाहते थे। ऋषि–मुनियों की परम्परा को मानते हुए स्वामीजी ने वार्षिकोत्सव के अंतिम दिन लाखों दर्शकों की उपस्थिथि में गांधी से कहा "आप मुझे अपना बड़ा भाई मानते हैं, इस बड़े भाई के पास तुम्हे देने के लिये के लिये एक ही वस्तु है द्य मैं अपना महात्मा (तब स्वामीजी महात्मा मुंशीराम के नाम से जाने जाते थे) उपाख्य इस अवसर पर आपको सादर भेंट करता हूँ। इसे अभी स्वीकार करलो फिर क्या था, लाखों लोगों ने करतल ध्वनि की द्य कुछ लोग जानबूझकर इस घटना छिपाते हैं और मिथ्या घटना तक बुनते हैं की ये उपाधि गांधी को रविन्द्रनाथ टैगोर ने दी थी। यह प्रयास गुरुकुल और स्वामी श्रद्धानंद, आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के ओर से ध्यान हटाने के लिये किया जाता है जो की एक अक्षम्य अपराध है। १६१६ में हुए जलियांवाला कांड के कारण भयभीत जनता ने एक जुलूस निकला जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे। जब जुलूस चांदनी चौक पहुंचा तो वहां मौजूद सेना की टुकड़ी में एक सिपाही ने बन्दूक स्वामीजी के सीने पर तान दी। स्वामीजी ने सिंहगर्जना करते हुए अपने छाती पर पड़ी चादर हटा दी और कहा "साहस है तो चलाओ गोली" लाखों की भीड़ का नेतृत्व करने वाले संन्यासी दुनिया को गरजते देख रही थी। कहते हैं इस घटना के पश्चात ३ दिनों तक पूरे दिल्ली प्रदेश में स्वामीजी का अघोषित राज कायम रहा। हिन्दू ही नही सैकड़ो मुस्लिम इस वीतराग संन्यासी के पास आते और अपनी समस्यायों का समाधान पाकर संतुष्ट होकर जाते। स्वामी श्रद्धानंद की अद्वितीय प्रभाव की खबर गांधी के कान तक पहुंचायी गयी। गांधी अपने प्रभाव की बागडोर फिसलते देखने लगे। उनमें ईर्ष्या की आग भड़क उठी। जिन्होंने गांधी के राजनीतिक क्रियाकलापों को नजदीक से देखा है, उनका स्पष्ट कथन है कि गांधी अपने बराबर किसी अन्य नेता को उठते नहीं देख सकते थे। उन्होंने अपने मार्ग में आने वाले हर नेता को चाहे वो नरम दल का रहा हो या गरम दल का, उसे किसी भी प्रकार हटाकर अपना मार्ग प्रशस्त किया द्य और ये एक कटु सत्य है कि उनकी इस राजनीति का पहला शिकार स्वामी श्रद्धानंद ही बने थे।

दिल्ली की जामा मस्जिद के गुम्बद से स्वामीजी ने यह वेदमंत्र पढ़ा था– "त्वं हि पिता वसो त्वं माता सखा त्वमेव। शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमी महे।।" संसार के इतिहास की ये इकलौती घटना है जब 'एक काफ़िर' मस्जिद के मिम्बर से वेद मंत्र का उच्चारण कर रहा था। इसके बाद मुसलमानों ने अन्य मस्जिदों में भी उनके व्याख्यान करवाये। मुसलमानों पर स्वामीजी के अमिट प्रभाव की खबर गांधी को लगी। अपनी लोकप्रियता के आड़े आते श्रद्धानंद उनको अपनी व्यक्तिगत पूजा में बाधा लगे। टर्की के बादशाह और अंग्रेजों का संघर्ष को लेकर 'खिलाफत आन्दोलन' जो की भारत के लिये निरर्थक था, गांधी ने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिये अकारण ही ये आन्दोलन छेड़ जन शक्ति को भ्रमित कियाद्य इससे कई नेता गांधी से असंतुष्ट होकर संगठन से अलग होने लगे द्य इनमें स्वामीजी भी थे द्य काकीनाडा कांग्रेस सम्मेलन में देश के ८ करोड़ अछूतों के उद्धार की जो घृणित योजना बनी, उसके कारण भी काफी असंतोष फैला। योजना के मुताबिक अछूतों को हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बांटने की बात कही गयी द्य यानी हिन्दू समाज के अभिन्न अंग करीब ४ करोड़ लोगों को सीधे सीधे इस्लाम की गोदी में सौंपने का षड़यंत्र था ये बात स्वामीजी के लिये असहनीय थी क्योंकि उन्होंने तो अपना जीवन ही अछूतों के उद्धार को समर्पित कर दिया था। वे कांग्रेस से सदा के लिये अलग हो गये द्य उनके पीछे पीछे सेठ बिड़ला और मदन मोहन मालवीय जी ने भी कांग्रेस छोड़ दी। इस घटना ने गांधी की ईर्ष्या की आग को और भड़का दिया। उन्होंने अपने पत्रों में आर्यसमाज और स्वामीजी के विरुद्ध विष वमन किया और उनके फैलाये सांप्रदायिक जाल ने आखिर अपना रंग दिखाया और २३ दिसम्बर १६२६ को स्वामी श्रद्धानंद की हत्या एक मुस्लिम के हाथों करा दी गयी। स्वामीजी की शहादत पर गांधी ने भी ऐसी वीरोचित मृत्यु की कामना की थी। वैसी मृत्यु तो खैर उनको नहीं मिली पर भारत के बंटवारे के कारण लाखों–करोड़ों हिन्दुओं की आहों से भरी मृत्यु अवश्य मिली द्य भगवान सब की इच्छा पूर्ण नहीं करता द्य पर स्वामीजी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। लाखों आर्यसमाजी सदा के लिये कांग्रेस से अलग हो गये और कांग्रेस मात्र एक सांप्रदायिक पार्टी बनकर रह गयी। महान संन्यासी को नमन।

(राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख पत्र "राष्ट्र धर्म के जनवरी 2016 विशेषांक से साभार)

2026 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के 100 वर्ष पूर्ण होने पर हम मोदी सरकार से स्वामी जी को भारत रत्न देने की मांग करते है।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

आर्य जगत् में रोष की लहर

नई दिल्ली, सोमवार 22 दिसम्बर 2025 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि भारत सरकार हस्तक्षेप करके बांग्लादेश मे हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार बंद करवाई। अभी एक हिन्दू युवक को खंबे से बाँध कर जिंदा जला दिया गया यह घटना समूची मानवता को शर्मसार करने वाली है उन्होंने कहा कि देश विभाजन के समय यदि सही बँटवारा किया होता तो यह समस्या ही न होती राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने आर्य समाज वेद मंदिर पीतमपुरा, रानीबाग व बिरला लाइन कमला नगर में अपने विचार व्यक्त किए प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि जिस तरह से पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांट दिया था उसी तरह से बांग्लादेश के दो हिस्सों करके हिन्दू राष्ट्र अलग से बना देना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य ऋषभ ने किया सुदेश आर्य के भजन सबने पसंद किए आचार्य नरेंद्र मैत्रेय ओमप्रकाश शास्त्री पानीपत, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किए सोहनलाल आर्य, मैथिली शर्मा ने कुशल संचालन किया। आचार्य कवर पाल शास्त्री का अभिनंदन किया गया। प्रमुख रूप से आर्य नेता सोमनाथ पुरी, किरण सेठी, वर्तपाल भगत,अमित नागपाल पार्षद आशीष आर्य सेशन जज रोहतक, संजीव बजाज अजय अग्रवाल, जोगी राम जैन आदि उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महाबेबिनार

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के **47वे स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'अंतरराष्ट्रीय आर्य महा वेबिनार'** दिनांक **30, 31 जनवरी व 1 फरवरी 2026** को आयोजित करने का विचार किया है।

आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत है कि कार्यक्रम को कैसे और अधिक उपयोगी व सफ़ल बनाया जाए कृपया विदेश में रहने वाले अपने सम्पर्क के मित्रों के फोन नंबर व email address भेजने की कृपा करें जिससे अधिक से अधिक आर्य जनों को जोड़ा जा सके सम्पर्क सूत्र देवेन्द्र भगत 9958889970, – अनिल आर्य, मुख्य संयोजक, मो. 9810117464

आर्यो उदयपुर चलो

प्रिय आर्य जनों आपको जानकर हर्ष होगा कि **दिनांक 22, 23 फरवरी 2026** को **नवलखा महल (जहां स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश लिखा)** में सत्यार्थ महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है एवं एक स्मारक का उद्घाटन भी होगा।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरे साथ आप भी इस भव्य आयोजन में सम्मिलित होकर समारोह की शोभा बढ़ाए। हमारा विचार 21 को दिल्ली से शाम 4.00 बजे की ट्रेन जाने का है जो सुबह 7.30 बजे उदयपुर पहुचगे और 24 को घूमने का कार्यक्रम रहेगा।

निम्नलिखित रेल का किराया और समय है (1.) राजस्थान हमसफ़र एक्सप्रेस (22986) सराय रोहिल्ला से सायं 4.15 उदयपुर प्रातः 7. 25 पर (2) मेवाड़ सुपर फास्ट एक्सप्रेस (12964) हजरत निजामुद्दीन सायं 6. 25 उदयपुर प्रातः 7.25 पर (3) चेतक एक्सप्रेस (20473) दिल्ली छावनी सायं 7.57 उदयपुर प्रातः 7.48 पर। किराया Sleeper- 500, AC III Tier 1100/–, AC II Tier 1600/–। आवास व्यवस्था निशुल्क भी है और Payment से भी है अपनी सुविधानुसार विकल्प चुने सम्पर्क सूत्र आचार्य महेन्द्र भाई जी, मो. 9013137070

– अनिल आर्य, 9810117464

पिछले पांच हजार वर्षों में स्वामी दयानन्द के समान वेदार्थ को जानने वाला व उसका प्रचार करने वाला ऋषि नहीं हुआ

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महाभारत का युद्ध पांच हजार वर्ष से कुछ वर्ष पहले हुआ था। महाभारत युद्ध के बाद भारत ज्ञान.विज्ञान सहित देश की अखण्डता व स्थिरता की दृष्टि से पतन को प्राप्त होता रहा। महाभारत काल के कुछ ही समय बाद ऋषि जैमिनी पर आकर देश से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई थी। ऋषि परम्परा का आरम्भ सृष्टि के आरम्भ से ही हुआ था। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने जिन चार पवित्र आत्माओं को वेदों का ज्ञान दिया था वह चारों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम वाले ऋषि थे। इन चार ऋषियों ने एक–एक वेद का ज्ञान ईश्वर से अपनी आत्माओं में प्रेरणा द्वारा प्राप्त कर जिन ब्रह्मा जी को ज्ञान दिया था वह भी ऋषि थे। ब्रह्मा व अग्नि ऋषि से आरम्भ ऋषि परम्परा महाभारत काल के बाद जैमिनी ऋषि पर समाप्त हो गई। जैमिनी ऋषि के पांच हजार वर्षों बाद ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषि दयानन्द ने आरम्भ के वर्षों में किसी एक गुरु का शिष्यत्व प्राप्त कर ऋषित्व को प्राप्त नहीं किया अपितु आयु के 22वें वर्ष में गृहत्याग से लेकर सन् 1863 में प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से अध्ययन समाप्त करने तक वह 17 वर्षों की अवधि तक निरन्तर ज्ञान की खोज व विद्या की प्राप्ति के कार्य में एक सच्चे जिज्ञासु के रूप में सचेष्ट रहे। वह देश के प्रमुख धार्मिक तीर्थ कहे जाने वाले स्थानों सहित हिमालय पर्वत के अनेक आश्रमों में योगियों की खोज में गये और उन विद्वानों से जितना ज्ञान प्राप्त हो सकता था, प्राप्त किया। उन्होंने योग के गुरुओं से योग भी सीखा था और इससे उन्हें 18 घंटो तक समाधि अवस्था में ईश्वर का ध्यान करते हुए ईश्वर में निहित आनन्द का भोग करने की दक्षता प्राप्त हुई थी। सन् 1860 से पूर्व गुरु विरजानन्द जी से मिलने तक उनमें अर्जित विद्या से और अधिक विद्या प्राप्ति की अभिलाषा थी जो मथुरा में ढाई वर्ष तक गुरु आचार्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या प्राप्त कर सन् 1863 में पूरी की। स्वामी विरजानन्द जी ने अपने शिष्य दयानन्द जी को देश वा संसार से अविद्या दूर करने की प्रेरणा की थी जिसका उन्होंने आदर्श रूप में पालन किया। ऋषि दयानन्द आदर्श ब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचर्य विषयक सभी शास्त्रीय नियमों का भी उन्होंने पूरा पालन किया था। उनका पूर्ण ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन ही मुख्य कारण था जिससे वह वेदज्ञान व योग समाधि द्वारा ऋषित्व को प्राप्त हो सके।

ऋषि वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थों के द्रष्टा को कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से वेदांगों व शास्त्रीय सिद्धान्तों का अध्ययन कर न केवल वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थ ही किये हैं अपितु पूर्व के वेदभाष्यकारों यथा सायण एवं महीधर आदि के वेदभाष्यों की समालोचना कर उनमें त्रुटियों व उनके मिथ्यार्थों पर प्रकाश भी डाला है और उनकी सयुक्तिक तार्किक समालोचना की है। ऋषि दयानन्द के वेदों के सत्य अर्थों को करने के लिये अनेक प्रमाणों से युक्त वेदभाष्य किया है जो निरुक्त के प्रणेता महर्षि यास्क के निर्वचनों, वेदार्थ के प्राचीन नियमों व सिद्धान्तों सहित वेदमन्त्रों के आर्ष व्याकरणानुसार यथार्थ अर्थों के अनुकूल है। वेदमन्त्रों के व्याकरण के नियमों के अनुसार जो अर्थ ऋषि दयानन्द ने किये हैं वह बुद्धि एवं तर्क संगत हैं तथा ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य हैं। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में हमारे ऋषियों व उसके बाद के लोगों के विचार, मान्यतायें व सिद्धान्त क्या थे व क्या रहे होंगे? सृष्टि के आदिकाल का वह समय वस्तुतः मानव जाति के इतिहास का स्वर्णिम काल था जब आज की तरह का प्रदुषित वातावरण एवं सुविधायुक्त जीवन नहीं था। उस समय लोग कृषि से प्राप्त अन्न, वनस्पति, फल व गोदुग्धादि का शाकाहारी व शुद्ध भोजन करके अपने जीवन का निर्वाह करते थे। ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के विषय में चर्चा करने के साथ ईश्वर के गुणों का चिन्तन, ध्यान व यज्ञ अग्निहोत्रादि करके वह अपने जीवन को व्यतीत करते थे। वेद का ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है साथ ही इसकी भाषा भी सब भाषाओं में उत्तम है। कहा जाता है कि संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने पर अनन्त आनन्द की अनुभूति होती है। यह बात सर्वथा सत्य है। ऋषि दयानन्द जी के जीवन को देखकर इस तथ्य की पुष्टि होती है।

ऋषि दयानन्द सच्चे ब्रह्मचारी, योगी तथा वेदों के सर्वोत्कृष्ट ऋषि व विद्वान थे। उन्होंने मनुस्मृति में बताये गये धर्म के दस लक्षणों को धारण किया हुआ था। योग के पांच यम एवं पांच नियमों को भी उन्होंने धारण किया था। उनके जैसा महापुरुष व योगी इतिहास में दूसरा नहीं हुआ है। उनसे पूर्व के महापुरुषों में अविद्या को दूर करने का दृण संकल्प तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन व धर्म प्रचार का कार्य अन्य किसी विद्वान ने नहीं किया जैसा कि ऋषि दयानन्द ने किया है। ऋषि दयानन्द ने ही आर्यों वा हिन्दुओं के आलस्य प्रमाद तथा विधर्मियों के छल, प्रलोभन एवं अन्य अशुभ योजनाओं, इरादों व कार्यों से विलुप्त व नष्ट हो रही सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा की। यदि वह न आते और वेदों का प्रचार न करते तो हम अनुमान से कह सकते हैं कि आज वैदिक धर्म व संस्कृति के दर्शन होने भी असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होते। ऋषि दयानन्द ने न केवल वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा ही की है अपितु वेदों पर आधारित वैदिक धर्म को विश्व का सबसे श्रेष्ठ धर्म और संस्कृति भी सिद्ध किया है। सभी मत, पन्थ वा धर्मों का आधार ऐतिहासिक पुरुष व महापुरुष हैं जबकि वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव ईश्वर व उसके यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता व समाधि अवस्था में उसका साक्षात्कार करने वाले ऋषि हैं। उन्होंने वेद एवं सभी शास्त्रों के प्रमाणों से युक्त वैदिक धर्म के व्यापक स्वरूप पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, पंचमहायज्ञविधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थ करने की योग्यता रखने व जीवन के अन्तिम समय तक वेद प्रचार व वेदभाष्य आदि का कार्य करने के कारण वह एक सच्चे ऋषि, श्रेष्ठ महापुरुष व योग के अन्तिम सोपान समाधि को सिद्ध किए हुए योगी थे। ऋषि दयानन्द द्वारा संस्कृत व हिन्दी में वेदभाष्य करने सहित सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करने से ही ऋषि सिद्ध हो जाते हैं। उन्होंने यह कार्य तो किया ही, इसके साथ ही उन्होंने समाज सुधार, देश की एकता व अखण्डता सहित देश की पराधीनता को दूर कर इसे आर्यों का स्वतन्त्र देश बनाने का स्वप्न भी देखा था। विदेशी अंग्रेज शासकों से पराधीन आर्यावर्त व अपने स्वदेश भारत में वेदों का साहस एवं निर्भीकतापूर्वक प्रचार करना, अन्य मतों के अनुयायियों की शुद्धि कर वैदिक धर्म में सम्मिलित करना, देश की स्वतन्त्रता की बातें करना और स्वराज्य का मन्त्र देना उनकी भारत देश को विशेष देने हैं। उनके यह कार्य इतिहास में अपूर्व व दुर्लभ हैं। ऋषि दयानन्द जी की हमें यह भी विशेषता प्रतीत होती है कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व से स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती आदि अनेक उच्च कोटि के ईश्वर, वेद और देशभक्त दिये हैं। इन ऋषि दयानन्द के प्रमुख शिष्यों ने धर्म प्रचार सहित शिक्षा जगत, समाज सुधार एवं देश की स्वतन्त्रता सहित विधर्मियों के षडयन्त्रों को निर्मूल करने में भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि ऋषि दयानन्द ने शास्त्रीय वचनों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में जिस मोक्ष वा मुक्ति का वर्णन किया है, ऋषि दयानन्द को वह मोक्ष भी प्राप्त हुआ है। यदि उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ न मानें तो लगता है कि फिर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी महाभारत काल के बाद कोई भी व्यक्ति व महापुरुष नहीं हुआ और सम्भवतः भविष्य में भी नहीं होगा। इसका कारण यह है कि जिस वैदिक धर्म का पालन करने से मोक्ष प्राप्त होता है उसका ऋषि दयानन्द से उत्तम पालन वा आचरण कोई मनुष्य नहीं कर सकता। ऋषि दयानन्द को यह श्रेय भी प्राप्त है कि उन्होंने देश व विश्व की जनता को सृष्टिकर्ता तथा जीवों के जन्म–मरण के आधार ईश्वर के सच्चे स्वरूपए गुण–कर्म–स्वभाव व उपासना की विधि प्रदान की और वायु को शुद्ध करने सहित रोगरहित, दीर्घायु से युक्त व सुखी जीवन के आधार अग्निहोत्र यज्ञ की विधि देकर सर्वत्र उसे प्रचलित किया। ऋषि दयानन्द का जन्मना जातिवाद समाप्त करने, फलित ज्योतिष को पराधीनता व पतन का कारण बताने सहित स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व उन्हें समाज में समानता का अधिकार दिलाने में भी सबसे अधिक योगदान है। ऋषि दयानन्द ने आर्य साहित्य का निर्माण करने सहित वेदभाष्य का कार्य भी किया और वेद वचन **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** से हमें परिचित कराया। हमें गायत्री मन्त्र व इसका यथार्थ अर्थ भी उन्होंने बताया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का अर्थ पूरे विश्व वा संसार को श्रेष्ठ गुणों से युक्त करना है जिससे संसार में कोई नास्तिक न हो, कोई अन्धविश्वासी न हो, कोई वेद विरुद्ध आचरण करने वाला न हो तथा कोई ऐसा न हो जो मातृ–पितृ–आचार्यों का आदर व सम्मान न करता हो। ऐसा भी कोई मनुष्य न हो जो मूक पशु–पक्षियों की हत्या कर व करवा कर उनके मांस का भक्षण करता हो, मद्यपान, धूम्रपान, अण्डों का सेवन करता हो तथा ब्रह्चर्यरहित जीवन व्यतीत करने वाला हो। ऋषि दयानन्द जी का हम व समस्त संसार जितना भी गुणगान करें उतना ही कम है। हम समझते हैं कि महाभारतकाल के बाद के पांच हजार वर्षों में ऋषि दयानन्द के समान वेदों के ज्ञान से प्रकाशमान व महापुरुषों के दिव्य गुणों से युक्त वेद के मन्त्रों के सत्य–अर्थों का प्रचार करने वाला और वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने वाला ऋषि व महर्षि उत्पन्न नहीं हुआ। ऐसे सर्वतो महान महर्षि देव दयानन्द को हम कोटिशः सादर नमन करते हैं।

— 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

ऋषिका कुकरेजा अरोड़ा ने आर्य जगत् का मान बढ़ाया

केंद्रीय आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री स्वतंत्र कुकरेजा की सुपुत्री ऋषिका कुकरेजा अरोड़ा ने अपने समर्पण, लग्न एवं बुलंद हौसले से हर कठिनाई को पार करते हुए **संघ लोक सेवा आयोग की भारतीय सांख्यिकी सेवा परीक्षा में भारत वर्ष में 15वां रैंक** हासिल कर अपने परिवार एवं आर्य जगत का मान बढ़ाया है। बेटी ऋषिका ने कहा कि उन्हें बाल्यकाल से ही उनकी दादी सुमित्रा कुकरेजा ने आर्य संस्कार प्रदान किए । पिता स्वतंत्र कुकरेजा एवं माता मीनाक्षी कुकरेजा ने उनके इस सपने को पूरा करने में हर कदम पर साथ दिया । विवाह के उपरांत उनके पति करण अरोड़ा एवं ससुराल पक्ष ने भी उनका भरपूर सहयोग प्रदान किया। ऋषिका का मानना है की सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। अनुशासन निरंतर अभ्यास और आत्मविश्वास ही मंजिल तक पहुंचने की चाबी है। अगर लक्ष्य साफ है और परिवार का साथ है तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 753वां वेबिनार सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में गोष्ठी सम्पन्न

हम उच्च नीच के भेदभाव से उपर उठकर जातिवाद क जहर को समाप्त कर कार्य करें –आचार्या विमलेश बंसल

शुक्रवार 26 दिसम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के 99वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 753 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्य विमलेश बंसल ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद के जीवन की प्रेरणाएं किस तरह हमारे आज के युवा वर्ग के लिए उपयोगी हो सकती हैं, ऊंच नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर अपने कमजोर भाइयों को गले लगाना, हर अच्छे कार्य की स्वयं से पहल करना, स्वभाषा, स्वभोजन, स्वदेश की वस्तुओं का प्रयोग करना, स्वाभिमान से निडर होकर जीना, अपने धर्म संस्कृति की रक्षा हेतु तन, मन, धन, समय, श्रम का दान देना, अन्तर्जातीय विवाह को हरी झंडी देना,जातिवाद का जहर समाप्त करना, बच्चों को सत्संग में लेकर जाना, संस्कारों को घर–घर पहुंचाना, यज्ञ,योग द्वारा परोपकारी होकर बढ़ना, वैदिक सभ्यता में रंगना, इत्यादि बातें स्वामी श्रद्धांनंद के जीवन को उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि विमला आहूजा व अध्यक्ष धर्मपाल आर्य ने भी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, कुसुम भण्डारी, कमला हंस आदि के मधुर भजन हुए।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

आर्य समाज रानी बाग व आर्य समाज पीतमपुरा

प्रथम चित्र में रविवार 21 दिसंबर 2025 में आर्य समाज रेलवे रोड रानी बाग दिल्ली के उत्सव प्रधान सोमनाथ पुरी का अभिनंदन करते अनिल आर्य व मंच संचालन करते मैथिली शर्मा व द्वितीय चित्र में आर्य समाज वेद मंदिर पीतमपुरा दिल्ली के मंत्री सोहनलाल आर्य का अभिनंदन करते अनिल आर्य साथ प्रधान व्रत पाल भगत सुदेश आर्य आदर्श आर्य देवेन्द्र सचदेवा आदि

शाहदरा में रक्तदान शिविर सम्पन्न व कुंवर पाल शास्त्री का अभिनन्दन

प्रथम चित्र में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर 25 दिसंबर 2025 को मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयोजक सुशील पंचाल, अभिमन्यु गुलाटी डी के शर्मा व परिषद के महामंत्री महेन्द्र भाई उपस्थित थे। द्वितीय चित्र में कुंवर पाल शास्त्री का अभिनंदन। आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष चुने जाने पर युवा उद्घोष की और से हार्दिक बधाई

आर्य समाज मोलड्बंद व डेरावाल का उत्सव सम्पन्न

रविवार 28 दिसंबर 2025 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि देश में जहां जहां हिन्दू घटा वहां अलगाव वाद आंतक वाद पनपा है, नई युवा पीढ़ी को राष्ट्र वादी विचार धारा से जोड़ने की आवश्यकता है। श्री आर्य आर्य समाज मोलढबंद विस्तार व डेरा वाल नगर दिल्ली में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जिन्हें भारत माता की जय और वंदे मातरम बोलने में दिक्कत है उनका यहां कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज को जात पात प्रांतवाद से ऊपर उठकर संगठित होने की आवश्यकता है। अनिल आर्य मोल ड बंद और डेरावाल नगर में बोल रहे थे। इस अवसर पर समाजसेवी थाना राम मखिजा की स्मृति में यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा प. भोला नाथ शास्त्री रहे।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970